विक्र कार्मक्रुए।। इप्रथमक्ष व निमक्रायिः बीड्र म्योगी डो सेम थ) महा बर मेर मेर मेर प्रयाः प्रभवेत स्रीन्द्रभेतल हास नक्ति थ्य रिक्षिणीयुउर्र्याङ्गाः महिल्महभीशानिः मूनों मेर्छः येवद्यः उर्राट उर्यम्भने॥ पार्ट्राट गर्भधारि अलं मन्डय वामनंय मेंच्ये वे नुलांय अत्येडभाय हथी केमय भारवाय भ प्रमाय बाज्य प्रजीक्षाय नगिन य महस्रमय मिमराय पस्तावय के मक्य गम्डम्य गिवित्रय मुद्राय प प्रय मन्त्रय विद्वते हिनेक्मय हिविह भाग राग्याण्य माउइल्य महमक्रांटणा य भीड्युग्णय त्रीणाय दीभागे दर्श य माम्य विदेश न्य भड्य माने राज्य माने न्मः थ्राचनाः उपरीप स्त्रिण स्वरं॥ इंग्लिम्प्रें मीकित्वमक् हिन् भभन्त्व गप्रण्डेमसद्भमेरिक्निभाष्ड्र न्य क्रिमीनवल्डीमश्चणिवडामहरू मुनार्ड्य हुने एहें उत्हरों भर्मनी

यम् व्यक्षके वार्क यम् वे विश्व के वार्ष के वार वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के

मर्क्ड्य गद्यक्रम् **म**अग्रिक भक्तः मस्य नग 1535 भप्रक गण्यस्य पुउभी माउना रिय्भाउक विष्णय च्या परत भनभाउका पसुमालन सन्दर्भ राम्प्रकृत्या भक्ष्म भड़ भड़ी भीतावड थम्भपर भभुभञ्चनि जासभ्ध علم अन्ते रग 沙河。 भक्त भम्म भनभूम् गेंभूमण्ना ज माउचा जो नुस घरन गुड ज्ञमां अने धाउधाउक गिवादिर क्रम राज्यभन्न कृति-क्षड्ड॰ मदान

भन्ते 430De क्रीक जिथा प्रकृ करम भगवा मन्द्रा तिमाउ मस् लिमग्य दुर्य या मार्गित्र है। हित्र । सम् मार्थित गड़ी

क मिनः भभः।। कलनभ्रा क्रवत्रभाभवग्रु अस्त्रनभयण एउ। एवंभेड डिमेड वे एपंभवभ ससंद्रभाव रः ४ ए ५ इति । भमगीर्भग्रह्मधारं इस्विश श्रुणभस्दं इस्विग्यस्थः बीउमकस्रिवार्थः

から

6

ाथक्रतः भवरणभन् उभभे।। क्रिअर्ड: रक्षेत्रक्रमन्त्रीताप्रदेश "भूव सिकु जिंच हु स्वाधिक स्वी पात्र अभाम्याण्य स्थानित्र लभभेनया एन इन अभे इन्य रगुक्त। एक्षरप्रभूत्र स्था स्माध्डणविक्रभद्भः इभ क्रमणभनभावागायभ्धाव भद्र धरं संभगं क्रभविताः। अवर लभ्रु भे उर्ग्यू अवे हव्या विश्व संभाउभागाया विष् रः भुकतरमायहलल्हा थियाम्य अभियाः भएउ मिडिडि वि. भारतका विषेत्र यनकृत भभस्य क

ग्र-

विगम्भविम्यम्भितः 1. श्रु र यक्षे विर यक्षा॥ व्या। हरावद्धि उभिसुपि विभुव भा अवररेग्ध्रभन्दम्भुउप ।मीनिक स्थाउवः माभुवाः स्वहाभिभागाः ।।मारा क्र उद्धा भव भिद्धिक रंभर भागा।